



## श्री हनुमान चालीसा

### ॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौँ पवन-कुमार ।  
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

### ॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥०१॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।  
अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥०२॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।  
कुमति निवार सुमति के संगी ॥०३॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।  
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥०४॥

हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥०५॥

संकर सुवन केसरी नंदन ।  
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥०६॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।  
राम काज करिबे को आतुर ॥०७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।  
राम लखन सीता मन बसिया ॥०८॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।  
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥०९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।  
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥१०॥

लाय संजीवन लखन जियाये ।  
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११॥

रघुपति किन्ही बहुत बड़ाई ।  
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।  
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३॥

सनकादिक ब्रम्हादि मुनीसा ।  
नारद सारद सहित अहीसा ॥१४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।  
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७॥

जुग सहस्र जोजन पर भानु ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥१९॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।  
तुम रच्छक काहु को डर ना ॥२२॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।  
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३॥

भूत पिसाच निकट नहीं आवै ।  
महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥२५॥

संकट तें हनुमान छुडावे ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।  
सोई अमित जीवन फल पावै ॥२८॥

चारो जुग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।  
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥३०॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता ।  
अस बर दीन जानकी माता ॥३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै ।  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४॥

और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत सेही सर्व सुख करई ॥३५॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।  
जो सुमिरे हनुमत बलबीरा ॥३६॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं ।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥३७॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।  
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥३८॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।  
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥४०॥

### ॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मुर्ति रूप ।  
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

### ॥ जय-घोष ॥

बोल बजरंगबली की जय ।

पवन पुत्र हनुमान की जय ॥